दृष्टिनिपात कर सृष्टि करते हैं। वेद तथा गीता में इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन है। वेदों में कहा है कि श्रीभगवान् ने प्रकृति पर दृष्टिपात कर उसमें अणु-जीवों का गर्भाधान किया। ये सब जीव जगत् में विषयभोग करने के लिए कर्मनिष्ठ हैं तथा माया-विमोहित होने से अपने को भोक्ता समझ रहे हैं। इस प्रवृत्ति की सीमा मोक्ष-कामना है, जिसके कारण जीवात्मा श्रीभगवान् से सायुज्य की अभीप्सा कर बैठता है। मुक्ति की यह कामना माया का सब से प्रबल बन्धन है। ऐसे अनेक विषय भोगमय जन्मों के बाद कहीं कोई दुर्लभ महात्मा वासुदेव (भगवान् श्रीकृष्ण) की शरण में जा कर परम सत्य को प्राप्त करता है।

श्रीकृष्ण के शरणागत हुआ अर्जुन पूर्व में उन्हें गुरु अंगीकार कर चुका है: **शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।** इसलिए श्रीकृष्ण अब उसके लिए बुद्धियोग अथवा भक्तियोग की पद्धति का निरूपण करेंगे, जो उन्हीं श्रीभगवान् की प्रीति के लिए किया जाता है। दसवें अध्याय के दसवें श्लोक में कथन है कि बुद्धियोग के द्वारा श्रीभगवान् से सीधा सम्पर्क हो जाता है, जो परमात्मा-रूप से सबके हृदय में विराजमान हैं। श्रीभगवान् से ऐसा सम्पर्क भक्तिभाव के बिना नहीं हो सकता। इसलिए भक्तियोग अथवा भगवत्सेवा अथवा कृष्णभावनामृत में स्थित भक्त ही श्रीकृष्ण की अशेषविशेष कृपा से इस 'बुद्धियोग' को प्राप्त करता है। श्रीभगवान् स्वयं कह रहे हैं कि प्रेमपूर्वक नित्य-निरन्तर उनकी भक्ति के परायण रहने वाले भक्तों को ही वे भक्ति का विशुद्ध ज्ञान प्रदान करते हैं। इस प्रकार भक्त सुगमता से शाश्वत् चिदानन्दमय भगवद्धाम में उनका सान्निध्य प्राप्त कर सकता है।

अस्तु, इस श्लोक में उल्लिखित 'बुद्धियोग' भगवद्भक्ति का ही वाचक है तथा यहाँ आए 'सांख्य' शब्द का पाखण्डी कपिल द्वारा प्रतिपादित सांख्य नामक अनीश्वरवाद से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। अतः यहाँ कहे गये सांख्ययोग को भ्रमपूर्वक नास्तिक सांख्य से सम्बन्धित नहीं समझना चाहिए। उस दर्शन का तो अपने समय में भी वस्तुतः कोई प्रभाव नहीं था। भगवान् श्रीकृष्ण भी ऐसे नास्तिक मनोधर्म का वर्णन कभी नहीं करते। सच्चा सांख्य वही है, जिसका वर्णन भगवान् कपिल ने श्रीमद्भागवत में किया है; पर उस सांख्य का भी वर्तमान प्रकरण से कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ सांख्य का तात्पर्य है—आत्मा और देह का तत्त्व-विवेचन। अर्जुन को 'बुद्धियोग' अथवा 'भक्तियोग' की पात्रता प्रदान करने के निमित्त से भगवान् श्रीकृष्ण ने आत्मतत्त्व का तात्त्विक विवरण प्रस्तुत किया। अस्तु, भगवान् श्रीकृष्ण के सांख्य तथा भगवान् कपिल द्वारा श्रीमद्भागवत में प्रतिपादित सांख्य में तात्त्विक एकता है। दोनों भक्तियोग हैं। इसी से श्रीभगवान् ने कहा है कि जो अल्पज्ञ हैं, वे मनुष्य ही सांख्य तथा भक्तियोग में भेदबुद्धि रखते हैं।

निस्सन्देह, अनीश्वरवादी सांख्य का भक्तियोग से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। फिरभी बुद्धिहीन व्यक्तियों का दुराग्रह है कि भगवद्गीता में अनीश्वरवादी सांख्य का वर्णन है।